आज़ादी का
अमृत महोत्सव

भारतीय स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सव : संधी आणि आव्हाने

(10) * Dr. Sangita Aher (Hindi)

* Book chapter

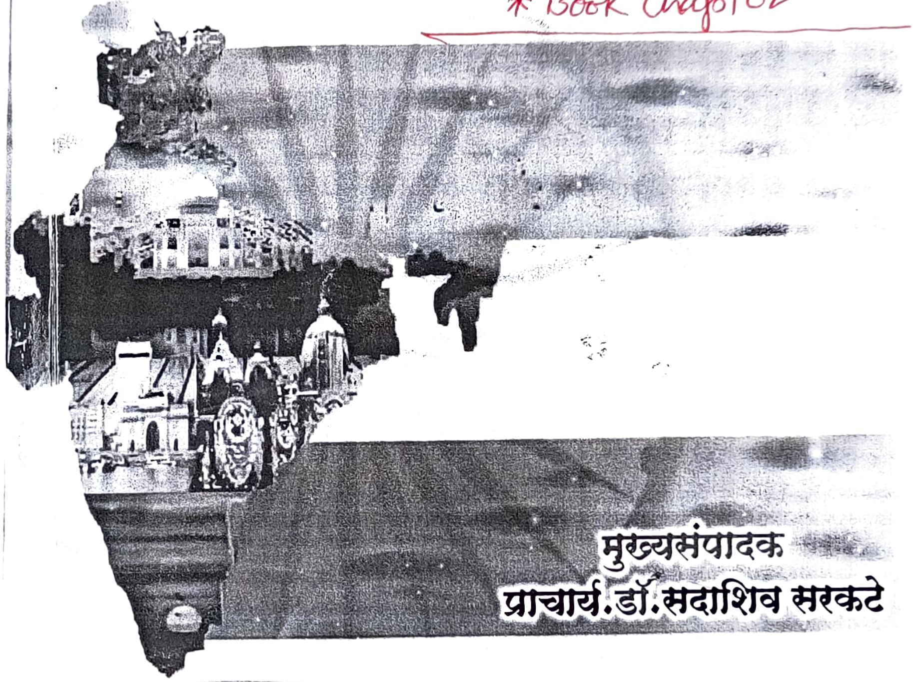

मुख्यसंपादक
प्राचार्य.डॉ.सदाशिव सरकटे

२१	प्रेमचंद साहित्य : स्वतंत्रता संग्राम का महाआख्यान	डॉ. रिन्धु सुमन	१८०
२२	स्वतंत्रता आन्दोलन के सर्जनात्मक नायक मुंशी प्रेमचन्द	डॉ. यशोदा मेहरा	१८८
२३	हिंदी कविता का आधुनिक काल और राष्ट्रीयता	डॉ. श्रीकान्त शुक्ल	१९५
२४	नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में नारी चेतना	प्रा. डॉ. मारोती उत्तमराव खेडेकर	२०२
२५	फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना	डॉ शुभा बाजपेयी	२१०
२६	प्रेमचन्द के उपन्यासों में राष्ट्रीय भावना	डॉ. सरोज कुमारी	२२०
२७	संतसाहित्य और मानवतावाद	प्रा. डॉ. जितेंद्र प्रताप शेळके	२२७
२८	डॉ. बलदेव के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर	श्रीमती वंदना जायसवाल डॉ. स्नेहलता निर्मलकर	२३६
२९	स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दी कविता की भूमिका	डॉ. अनिला मिश्रा	२४४
३०	स्वतंत्रता आंदोलन और डॉ. रमाकान्त सोनी के साहित्यों में राष्ट्रीय संचेतना : एक अनुशीलन	सरोजनी डडसेना डॉ.रेखा दुबे	२५१
३१	अहल्या की नारी चेतना	प्रो. डॉ. आहेर संगीता एकनाथराव	२५७
३२	भारतेंदु युगीन काव्य में राष्ट्रीयता	प्रा. डॉ. विजय पवार	२६२

अहल्या की नारी चेतना

प्रो. डॉ. आहेर संगीता एकनाथराव

महिला महाविद्यालय, गेवराई।

प्रस्तावना :

आधुनिक भारत में नारीवादी चिन्तन परम्परा में स्त्रियों का योगदान सराहनीय रहा है। यह दौर नारी जागरण का और सक्षमीकरण का दौर है। नारी के सम्बन्ध में सदियों से जो स्थापित मान्यताएँ थी उसमें परिवर्तन आया था। समकालीन महिला लेखन में इस परिवर्तन की यथास्थिति अभिव्यक्ति हुई है। नारी की नजर में नारी की स्वानुभूत संवेदना की सषक्त अभिव्यक्ति मिलती है। हिन्दी साहित्य की लगभग सभी विधाओं के माध्यम से नारीवादी चेतना का विकास एवं प्रसार हुआ। प्रत्येक क्षेत्र में नारी की स्थिति, दशा और दिशा को चित्रित करने में साहित्य का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। साहित्य, संस्कृति, राजनीति, व्यापार, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि और उद्योग में स्त्रियों ने अपनी पहचान बनायी। उत्तरषती के हिन्दी साहित्य में नारी लेखन की अहम् भूमिका रही है। अपने मानवीय व्यक्तित्व तलाष करती हुई आधुनिक युग की नारी मुक्ति –संघर्ष में अपनी अहम् भूमिका निभा रही थी। हिन्दी साहित्य में नारीवादी चिन्तन परम्परा में महिला लेखिकाओं की प्रबल भागीदारी रही है। महिला रचनाकारों की समृध्द परम्परा में प्रभा खेतान का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्रभा खेतान ने अपनी कविता, उपन्यास और चिन्तनपरक साहित्य के माध्यम से नारी चेतना को अभिव्यक्त किया है।

प्रभा जी का साहित्य बहुआयामी है। उनके कविता, उपन्यास, आलोचनात्मक ग्रंथ, अनुवाद और आत्मकथा आदि साहित्य प्रकाशित है। उनके साहित्य सृजन की शुरुवात कविता से ही हुई है। कविता के प्रति लगाव का कारण वे मानती है कि कविता जिन्दगी का ऐसा दर्पण है जिसमें कवि वास्तविक तस्वीर देखता है। उनके छः काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए है, जिसमें 'अहल्या' नामक खण्डकाव्य है जिसे प्रभाजी लम्बी कविता मानती है। 'अहल्या' इस पौराणिक स्त्री पात्र पर अब

तक अनेक काव्य रचे है, उस पर चिंतन और मंथन हुआ है। प्रभाजी भी अपने इस काव्य का विषय अहल्या को लेकर नारी–विमर्श के साथ नारी–चेतना को भी प्रस्तुत करती है। 'अहल्या' के मिथक को लेकर हिन्दी साहित्य में नारी जीवन की त्रासदी को व्यक्त करता है। प्रभा खेतान ने अहल्या के परित्यक्ता के दुःखी जीवन पर वैचारिक दृष्टिक्षेप डाला है। 'अहल्या' के माध्यम से नारी–चेतना को जगाया है। इन्द्र के दवारा छली गयी अहल्या को गौतम दवारा दंडनीय अपराध की वजह से परित्यक्त जीवन झेलना पड़ा। पाषाण बनी अहल्या उस दंड को सहती है जिसमें बिना परख के उसे दोशी माना गया। अहल्या ऐसी नारियों का प्रतिनिधित्व करता है। जो आज इंतजार करती है, कोई राम आयेगा और उसका उध्दार करेगा। प्रभा खेतान कहती है, राम ने उस अहल्या का उध्दार किया, परन्तु आज की नारी की राम की प्रतिक्षा करना व्यर्थ है। आज की नारी को अपनी अस्मिता और अस्तित्व की तलाश खुद करनी है।

"मत करो प्रतीक्षा राम की,
प्रयास करो
प्रस्तर की कारा से
मुक्ति की।"[1]

पति गौतम दवारा शापग्रस्त अहल्या दुर्भाग्यशाली रही है। अपने उध्दार के लिए बरसों उसे राम की प्रतीक्षा करनी पड़ी। पाषाण बनी अहल्या का संवेदनशील राम उध्दार करते हैं। पुरूष अहंकारी होता है और स्त्री सहनशील होती है। सहन करने के कारण ही उसे दुःखों को झेलना पड़ता है। परन्तु प्रभा जी कहती है अब नारी को सजग होना है, किसी राम की मदत की अपेक्षा करने में बरसों प्रतीक्षा करने के बजाय स्वयं ही लड़ना है। नारी चेतना को जगाते हुए कवयित्री कहती है,

"छोड़ दो,
किसी ओर मिली मुक्ति का मोह।
तोड़ दो, षापग्रस्तता की कारा
तुम अपना उत्तर स्वयं हो अहल्या।"[2]

प्रभा जी इस युग के सत्य को उभारा है। पुरुष वर्चस्व का वह विरोध करती है। युग–युग से कारा में बन्दिनी स्त्री को खुद ही कारा से मुक्त होना है, क्योंकि राम ने अहल्या को मुक्त तो किया परन्तु उसका बन्दिनी रुप तो कायम है। इसीलिए कवयित्री सचेत करती है आज की नारी को इस रुप और अभिशाप को तोड़ने के लिए। क्योंकि इस सक्षमीकरण के दौर में भी ऐसी अनेकों अहल्याएँ हैं, जो सहना ही नियति है कि शापग्रस्त मानसिकता में जीती है।

"आज भी झेलती अहल्या
मोक्ता इन्द्र
विधायक गौतम
मुक्ति–दाता राम
क्यों?
आखिर क्यों?
बदल नहीं पायी कभी
उधार से मुक्ति से
पुकार की भाषा?"[3]

नारी मन की चेतना को झकझोरती हुई कवयित्री कहती है की, अब तो सोचो यह अन्याय तुम पर आखिर क्यों? जीवन की त्रासदी को मूक होकर सहेगी नारी कब तक? जीवन की समस्त त्रासदी और व्यथा को चुपचाप सहन करना यही नारी की नियति मानी गयी, परन्तु इस नियति को नारी को बदलना होगा। आज की 'अहल्या' को स्वयं ही अपना उध्दार करना होगा। क्योंकि अनेकों विरोधी गुणों को उसने अपने में समाया हुआ है। चंदन की शीतलता अगर उसमें है तो, चंदन की ज्वलनशीलता भी है, इसे नारी को याद रखना होगा।

"श्मशान की दुनिया में
चंदन काठ सा तुम्हारा अस्तित्व
अब भी तो आत्मसात करता
दाह की ज्वाला?"[4]

भारतीय समाज में नारी को समर्पण की सीख दी जाती है। स्त्री सदैव पुरुष के प्रति समर्पण भाव रखती है। प्रभा जी का कहना है समर्पण की परम्परा स्त्री–पुरुष दोनों पर लागू

होनी चाहिए। इसीलिए वह नारी को सचेत करती हुई 'स्व' को घर–परिवार के सीमित दायरे से निकलकर समाज से जुड़ने की बात को अहमियत देती है, जहाँ स्त्री की पहचान बन सकती है। नारी में सहशीलता होती, यही उसे उर्जा प्रदान करती है। क्योंकि नारी हर आपत्ति को झेलते हुए भी अडिग रहती है। कवयित्री का कहना है की हर आपत्ति का सामना करने का सामर्थ्य स्त्री में है, और यह प्रकृति का उसे मिला हुआ वरदान है कमजोरी नही; ऐसी नारी को भय कैसा?

"देती हुई चुनौती
त्रासदी को
आदमी को
प्यार कर सकती है
टकराती हुई
हिंसा की लहरों ते
भय कैसा?
तूफान तो हमारी भाषा है।"[5]

प्रभा जी अहल्या के मानस भावों को अभिव्यक्त करती है। युगों से यह नारी अपनी मुक्ति की कामना कर रही है, परन्तु आज भी उसे मुक्ति नहीं मिली। नारी जीवन की विवशता, लाचारी और बेबसी को कवयित्री मिटाना चाहती है। उन्होंने नारी जीवन की त्रासदी को चित्रित किया है, परन्तु उसके प्रति वे चिंतित है और मुक्ति की कामना करती है।

प्रभाजी 'अहल्या' के माध्यम से बताना चाहती है कि अहल्या के शाप का अंत अभी तक नहीं हुआ है। जब तक नारी उसकी मुक्ति के लिए 'राम' की अपेक्षा नहीं करेगी तब तक वह खुद मुक्त नहीं हो सकेगी। पुरूष की दया पर आश्रित स्त्री पाषाणी अहल्या ही बनी रहेगी। अपनी मुक्ति का प्रयास उसे खुद ही करना है। स्त्री की जीवन के प्रति उत्कट जिजीविशा और जीने की चाह के प्रति अहल्या का उदाहरण देती हुई प्रभाजी लिखती–

"टुकड़ा–टुकड़ा
खतम होती रही हो तुम
फिर भी
जीवन की सुरा होठो से सहाये।"[6]

समाज में स्त्री अस्तित्व और अस्मिता के प्रति सजगता लाने का हर सम्भव प्रयास किया गया है। आदिम युग से स्त्री– पुरूष के शाष्वत, सम्बन्धों में स्त्री के यथार्थ को उद्घाटित करने का प्रयास 'अहल्या' के माध्यम से हुआ है। प्रभाजी स्त्री के अन्या और गौण रुप तथा दोयम दर्जे के प्रति सचेत करना चाहती है। इसीलिए 'अहल्या' के माध्यम से पितृसत्ताक समाज की मान्यताओं मर्यादाओं, नियमों और नीतियों पर प्रकाश डालती हुई स्त्री को अन्तर्बाह्य दशा और दिशा को उजागर करती है। खामोशी, अन्याय, अपमान, लाचारी, उत्पीड़न को आकार देने की कोशिश प्रभा जी ने की है। नारी को समर्पण, सेवा, त्याग और प्रेम के भ्रम में भ्रमित करके रखा जाता है, इतनाही नही 'देवी' जैसे उपमानों में कैद करके रखा जाता है और पुरूष के वर्चस्व को कायम रखा जाता है। पौराणिक पात्र 'अहल्या' की राम से मुक्ति करवाई गयी, लेकिन आज भी ऐसी अनेकों अहल्या है जिनकी मुक्ति कोई राम नहीं बल्कि खुद नारी को करनी होगी। नारी–जीवन को लगा यह अभिशाप उसे खुद मिटाना होगा।

निष्कर्ष :

हम कह सकते है कि अहल्या में नारी जीवन की वेदना और उपेक्षा के साथ–साथ उसके अन्तरिक आक्रोश को भी उजागर कर नारी–चेतना को जगाया है। कवयित्री के नारीविषयक विचार उदात्त एवं सुलझे हुए है। इसीलिए वह पुरूष वर्चस्व वाली समाज व्यवस्था में शोषित और उपेक्षित स्त्री को अहमियत देती है। कवयित्री स्त्री–शोषण के तमाम उपकरणों का पर्दाफाश करती है और स्त्री–पुरूष समानता की वकालत भी करती है। इसीलिए अहल्या के माध्यम से वह कहती है आज की नारी को राम की प्रतीक्षा नहीं करनी है, अपना उध्दार उसे स्वयं ही करना होगा। 'अहल्या' के माध्यम से स्त्री के मानवीय व्यक्तित्व की तलाश की गयी है।

संदर्भ सूची :

१) प्रभा खेतान अहल्या २६
२) वही वही २७
३) वही वही ४२
४) वही वही ५१
५) वही वही ७५
६) वही वही ५८

***